# पाठ 4: एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! (शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र')

## 1. लेखक परिचय

शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकार हैं। उनकी कहानियों में बनारस की ठेठ संस्कृति, कजली गायन परंपरा और समाज के शोषित वर्ग का यथार्थ चित्रण मिलता है।

## 2. विस्तृत सारांश

**दुलारी और टुन्नू:** दुलारी एक प्रसिद्ध 'गौन्हारिन' (गायिका) थी। खोजवाँ बाज़ार के एक कजली दंगल में उसका मुकाबला 17 साल के नए कजली गायक 'टुन्नू' से हुआ। टुन्नू दुलारी से एकतरफा प्रेम करने लगा। वह एक गरीब कवि था, लेकिन उसके मन में देश के प्रति भी प्रेम था। दुलारी यद्यपि टुन्नू को डाँटती थी, लेकिन भीतर ही भीतर वह उसके निश्छल प्रेम का सम्मान करती थी।

**विदेशी वस्त्रों की होली:** भारत में विदेशी कपड़ों का बहिष्कार (Boycott) चल रहा था। टुन्नू भी विदेशी कपड़ों की होली जलाने वाले एक जुलूस में शामिल हो गया। वहीं पर अंग्रेज़ पुलिस का अफसर **'अली सगीर'** था। अली सगीर की टुन्नू से कहा-सुनी हो गई और उसने टुन्नू के पेट में भारी बूट (जूता) मार दिया, जिससे टुन्नू की मौके पर ही मौत हो गई। बाद में पुलिस ने उसकी लाश को गायब कर दिया।

**दुलारी का विद्रोह:** जब दुलारी को टुन्नू की शहादत (मौत) का पता चला, तो वह अंदर तक टूट गई। उसने अपने सारे विदेशी रेशमी कपड़े उतार दिए और टुन्नू द्वारा दी गई 'खद्दर की धोती' (देसी कपड़ा) पहन ली। उसने पुलिस (अली सगीर) के सामने खुलेआम आज़ादी और विद्रोह के कजली गीत (एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!) गाकर अंग्रेज़ सरकार का विरोध किया। इस प्रकार टुन्नू के प्रेम ने उसे भी एक देशभक्त बना दिया।

## 3. पाठ का मूल भाव

इस कहानी का मूल भाव यह दर्शाना है कि **देशभक्ति और स्वतंत्रता आंदोलन में केवल बड़े नेताओं का ही योगदान नहीं था**, बल्कि समाज के उपेक्षित, हाशिए पर खड़े और साधारण लोगों (जैसे गायिका दुलारी और गरीब कवि टुन्नू) ने भी अपनी जान की बाज़ी लगाकर आज़ादी की लड़ाई लड़ी थी। सच्चा प्रेम व्यक्ति को महान और देश-भक्त बना सकता है।

Schorbit